UPHIN-11403

RNI - 43357/85

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023

शिशु मन्दिर सन्देश

सरस्वती शिशु मन्दिर / विद्या मन्दिर / बालिका विद्या मन्दिर तथा पूर्व छात्रों की मासिक पत्रिका

वर्ष - 40 | अंक - 09 | युगाब्द - 5125 | विक्रम संवत् - 2080 | जून - 2023

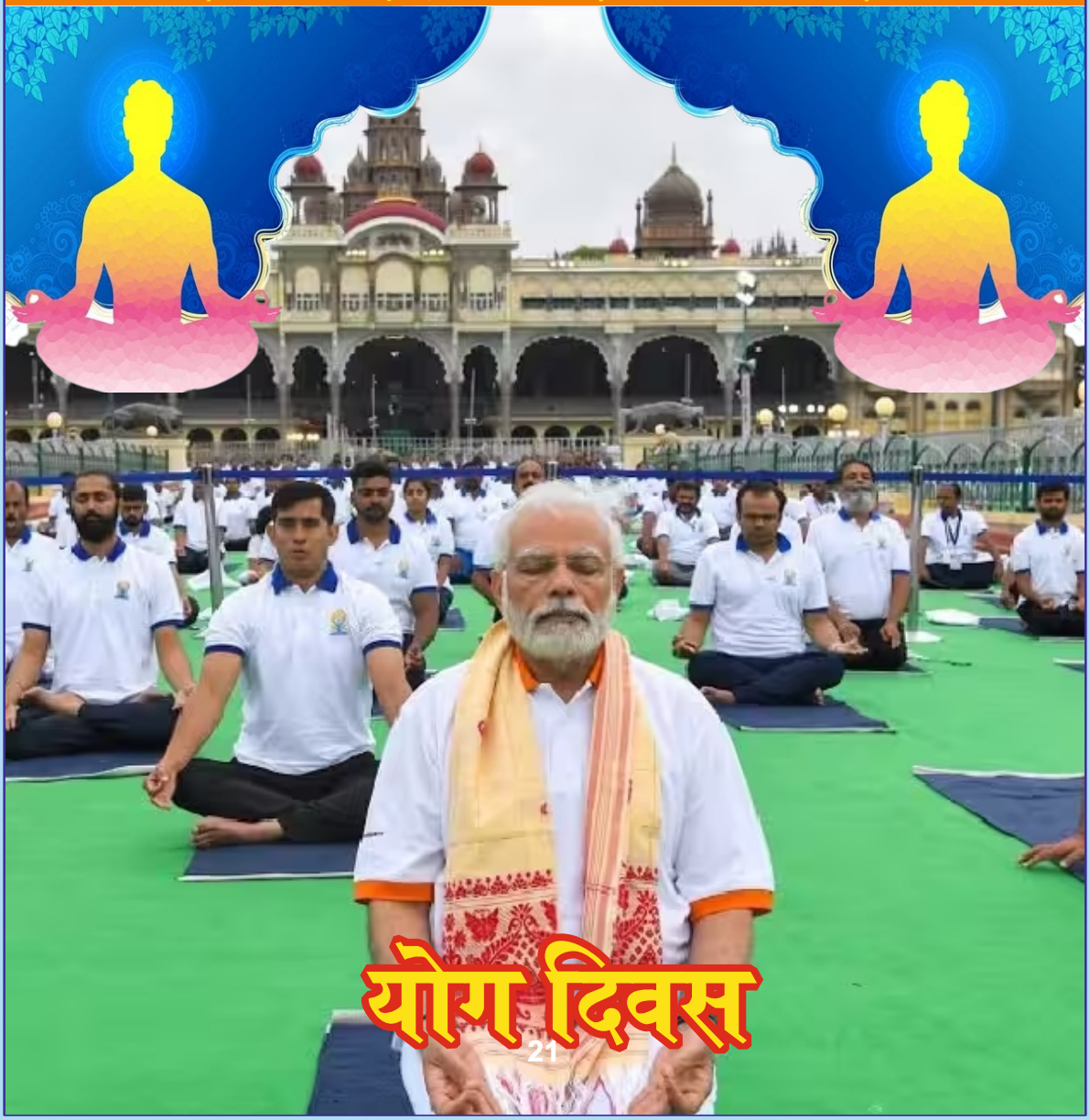

योग दिवस

सम्पादकीय कार्यालय

शिशु मन्दिर संदेश

केशव कृपा, सरस्वती कुञ्ज
निराला नगर, लखनऊ-226020
फोन नं. : 0522-405302
ईमेल : sms2019ps@gmail.com

संरक्षक मण्डल

मा. ब्रह्मदेव शर्मा
मा. यतीन्द्र शर्मा
मा. डोमेश्वर साहू
मा. हेमचन्द्र जी

प्रधान सम्पादक

उमाशंकर मिश्र
ईमेल :
umashankarmisra1957@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिव भूषण त्रिपाठी
दिनेश कुमार सिंह

शुल्क

वार्षिक मूल्य : 120
दस वर्षीय : 1000

स्वामी–शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, प्रकाशक एवं मुद्रक–डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी द्वारा प्रिंटिको प्रिटर्स, २२ जगत नारायण रोड, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एवं केशव कृपा, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पादक–उमाशंकर मिश्रा।

पीआरवी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार किसी तरह के कानूनी विवाद का निपटारा लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

छत्रपति शिवाजी की उदारता

वीर मराठा छत्रपति शिवाजी अपने शत्रुओं को क्षमा दान देने के लिए काफी प्रसिद्ध हैं। ऐसी ही एक घटना है। एक बार शिवाजी अपने शयनकक्ष में सो रहे थे। रात का समय था। एक चौदह वर्ष का बालक किसी तरह छुपकर उनके शयनकक्ष में जा पहुंचा। वह शिवाजी को मारने आया था। लेकिन शिवाजी के विश्वस्त सेनापति तानाजी ने उसे पहले ही देख लिया था। लेकिन फिर भी उन्होंने उसे जाने दिया। वह जानना चाहते थे कि आखिर यह लड़का क्या करने आया है। उस लड़के ने तलवार निकाली और शिवाजी पर चलाने ही वाला था कि पीछे से तानाजी ने उसका हाथ पकड़ लिया। इतने में शिवाजी की भी नींद टूट गई। उन्होंने उस बालक से पूछा कि तुम कौन हो और यहां क्यों आये हो? उस बालक ने निडरता पूर्वक बताया कि उसका नाम मालोजी है और वह शिवाजी की हत्या करने आया था।

जब शिवाजी ने उससे कारण पूछा तो उसने बताया कि 'मैं एक गरीब घर से हूं तथा मेरी मां कई दिनों से भूखी है। इसलिए अगर मैं आपकी हत्या कर दूं तो आपका शत्रु सुभाग राय मुझे बहुत सारा धन देगा। यह सुनकर तानाजी गुस्से में बोले- ''मूर्ख बालक! धन से लोभ से तू छत्रपति शिवाजी का वध करने आया है!

अब मरने के लिए तैयार हो जा?'' इतने में मालोजी शिवाजी से बोला- ''महाराज! मैंने आपका वध करने की कोशिश की अत: निसंदेह मैं दण्ड के योग्य हूं, लेकिन कृपा करके मुझे अभी के लिए जाने दीजिये। मेरी मां भूखी है वह जल्द ही मर जाएगी। मां का आशीर्वाद लेकर मैं सुबह आपके सामने उपस्थित हो जाऊंगा। बालक की बातें सुनकर तानाजी बोले- हम तेरी बातों के धोखे में आने वाले नहीं है, दुष्ट बालक ! बालक मालोजी बोला- मैं एक मराठा हूं सेनापति महोदय ! और आप बखूबी जानते हो कि मराठा कभी झूठ नहीं बोलते। इतना सुनकर शिवाजी ने उस बालक को जाने दिया। दूसरे दिन सुबह जब राजदरबार में छत्रपति शिवाजी महाराज सिंहासन पर बैठे थे। तभी द्वारपाल एक सन्देश लेकर आया कि एक बालक महाराज से मिलना चाहता है। जब उसे अन्दर बुलाया गया तो यह वही बालक था जिसे कल रात शिवाजी ने मां का आशीर्वाद लेने जाने दिया था। महाराज के सामने आकर बालक बोला- मैं आपका अपराधी महाराज! आपकी उदारता के लिए आपका आभार व्यक्त करता हूं। आप जो चाहे दण्ड दे सकते हैं। शिवाजी ने सिंहासन से उठकर उस बालक को गले लगाते हुए कहा- तुम जैसे सच्चे मराठाओं को अगर मृत्यु दण्ड दे देंगे तो फिर जिन्दा किसे रखेंगे? आज से तुम हमारी सेना के सैनिक हो । छत्रपति ने उसे बहुत सारा धन दिया तथा उसकी मां की चिकित्सा के लिए राज वैद्य को भेजा।

अपनी बात

कहते हैं कि–ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समाना अर्थात् ज्ञान हीन मनुष्य पशु के समान है, और ज्ञान की प्राप्ति शिक्षा के बिना नहीं होती। संसार में प्रायः सभी अमीर–गरीब अपनी सन्तानों को खुद से अच्छा, श्रेष्ठ, सूखी और सम्पन्न बनाने के लिए अच्छी से अच्छी शिक्षा के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। पर यह अच्छी शिक्षा क्या है? उसका क्या स्वरूप है? क्या महंगी शिक्षा ही अच्छी शिक्षा है ? क्या हमारी आशा और आकांक्षाओं के अनुरूप शिक्षा सभी को सुलभ है? क्या हमारे विद्यालयों का आधारभूत ताना–बाना सब ठीक है? आदि अनेक प्रश्न हमारेसामने हैं, जिनपर चिन्तन–मनन, विचार–विमर्श कर शिक्षा को सर्व सुलभ बनाने, शिक्षा के स्वरूप में आमूल चूल परिवर्तन कर, शिक्षा में गुणवत्ता विकास की दृष्टि से नई शिक्षा नीति 2020 में जहाँ एक और आवश्यक भवन, बैठक व्यवस्था, प्रयोगशाला, कम्प्यूटर, खेल सामग्री, आधुनिक तकनीकी, प्रसाधनगृह, अध्ययन सामग्री, शिक्षाकी विषयवस्तु के निर्धारण पर बल दिया गया है। वही जैसे बंदूक युद्ध नहीं करती बल्कि बंदूक थामने वाली कलाई, युद्ध करती हैं. ऐसे ही संसाधनों का प्रयोग करने वाले शिक्षक ही शिक्षा के दायित्व निर्वहन के लिए महत्वपूर्ण अंग है, अस्तु शिक्षक की मनःस्थिति, उनमें आधुनिक शैक्षिक संसाधनों के उपयोग की क्षमता. योग्यता– पात्रता बढ़ाने, उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था उनकेस्वास्थ्य को ठीक रखने, आर्थिक एवं मानसिक तनावों से मुक्त करा कर मनःस्थिति अनुकूल रखने की दिशा में तथा इस तरह के अनेक विन्दुओं को ध्यान में रखकर शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक के व्यापक प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था की गई है।

अज्ञान के अन्धकार को हटाकर ज्ञान में प्रतिष्ठित होने के लिए हमें अपने चिन्तन में भी और अधिक उदारता एवं व्यापकता लाने की आवश्यकता है। संकीर्णता न तो कभी हमारे चिन्तन का विषय रहा है और न ही हमारी संस्कृति में ही इसका कोई स्थान रहा है। वैदिक कृषि का यह मन्त्र वाक्य हमारा पथ प्रशस्त करते हुए कहता है. **'आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।** अर्थात्–कल्याणकारी अच्छी बातें, विचार–सद्गुण चारों ओर से आने दो, सहर्ष इनका स्वागत करो और तदनुसार जीवन में उनका उपयोग करो।'

हम अपने गौरवशाली इतिहास, परम्पराओं और सद्संस्कारों, राष्ट्र भक्ति, स्वाभिमान, सामाजिक नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों के साथ आधुनिक तकनीकी ज्ञान, कला–कौशल, ज्ञान–विज्ञान का समादर करें और अपने कर्तव्य कर्म में कभी शिथिल न हो।

सत्यं वद्। धर्म चर स्वाध्यायान्मा प्रमदः आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजानन्तु मा व्यवच्छेसी सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्।.... मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि। यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि तैत्तिरीय उपनिषद, शिक्षावल्ली, अनुवाक 11. मंत्र 1–2 को समझ कर हम स्वयं अपने जीवन में तदनुसार आचरण करें और दूसरों को भी प्रेरित करें। तभी शिक्षा की सार्थकता सिद्ध हो सकेगी। इन्ही शुभ कामनाओं के साथ यह अंक आप को समर्पित है।

बातचीत एक कला

प्रो. डॉ. लक्ष्मी कान्त सिंह
पूर्व अध्यक्ष विद्या भारती

बचपन में एक कहानी पढ़ी थी, जिसमें एक अंधा साधु केवल बात अथवा पूछताछ के ढंग से ही परिचर (सहायक सैनिक), वजीर (राजा के मंत्री) और राजा की पहचान कर लेता है। जब अपने बिछुड़े (भटके) हुये घोड़े को, अन्धे साधू के द्वारा दिये गये संकेत के आधार पर राजा पा जाता है, तो उसी रास्ते से वापस आते समय राजा साधू को धन्यवाद ज्ञापन के उपरान्त पूछता है कि "महाराज जी मैं अपना घोड़ा तो पा गया, आपको साधुवाद; किन्तु एक जिज्ञासा है कि आपने बिना नेत्र ज्योति के यह कैसे जाना कि सर्वप्रथम आपके पास मेरा परिचर आया, फिर मेरे मंत्री और बाद में मैं ? साधु ने कहा –राजन! मनुष्य बात–बीत से पहचाना जाता है। सर्वप्रथम घोड़े के विषय में पूछने आये नौकर ने ऐ अन्धे यहाँ होकर कोई घोड़ा गया है?" वजीर ने 'सूरदास जी क्या यहाँ हो के घोडा गया है?" और आप आये तो विधिवत प्रणाम बंदन के उपरान्त 'साधु महाराज वैसे तो आप नेत्रों से अक्षम प्रतीत होते हैं पर क्या आपको इधर से किसी घोड़े के जाने का अहसास है? –महाराज केवल इन सम्बोधनों के आधार पर ही मुझे आप तीनों को पहचानने में कोई परेशानी नहीं हुई।

इस के साथ ही यह भी ध्यान आता है कि कैसे द्रोपदी के एक वाक्य 'अन्धों के अन्धे ही होते हैं" ने दुर्योधन के क्रोध को जागृत कर दिया था, जिसकी परिणति महाभारत जैसे भीषण युद्ध में हुई। इस घटना को उद्धृत करते करते यह भी याद आ रहा है कि कैसे भरी सभा में कौरवों ने द्रोपदी के चीर हरण से नारी शील को अपमानित किया और पितामह भीष्म, आचार्य और कृपाचार्य जैसे ज्ञानी–मानी एक शब्द भी बोल नहीं सके। वे बोलते तो महाभारत भी टाला जा सकता था।
तब यह ठीक ही, समझ में आता है कि –

'अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप'
'मीठी बानी बोलिये मन का आपा खोय'

'बिना विचारे जो कहे सो पाछे पछताय'

अर्थात बात चीत का अपना एक विशेष महत्व होता है। बात–चीत या वार्तालाप (Conversation) एक कला है। आज के इलेक्ट्रानिक युग में ई–मेल, ई–मैसेज, व्हाट्सएप, ट्विटर और फेस–बुक जैसी चैटिंग सुविधाओं की बाढ़ आने से वर्तमान युवा पीढ़ी सन्मुखी वार्ता (Face-to-Face Conversation) से कटती जा रही है। भारत ही नहीं विश्व स्तर पर सन्मुखी वार्ता की कमी पर चिन्तायें व्यक्त की जा रही हैं। लोगों की इस क्षमता को बनाये रखने हेतु विभिन्न लेखों और प्रयोगों के माध्यम से प्रयास हो रहे हैं।

अमेरिका के टेलर बाल्ड्री ने तो मिनियापोलिस की गलियों के कोनों और सड़कों के चौराहों पर मेज कुर्सी और मुक्तवार्ता (Free Conversation) के बैनर लगा कर लोगों को आपसी वार्ता (Mutual Interaction) और सन्मुखी वार्ता (Face to Face conversation) हेतु आमंत्रित कर उनमें इस कला के विकास हेतु एक अनूठा कदम उठाया। पूर्व में तो लोगों ने इसको समय की बर्बादी और बाल्डी अब पेशे से कलाकार बाल्ड्री का यह प्रयास रंग लाता प्रतीत होता है। क्योंकि उनकी प्रेरणा से छात्रों को साक्षात्कारों में, कालेज अध्यापको को विषय प्रस्तुति में, 'व्यावसायिक जनों को क्रय (Sale) बढ़ाने में और जन प्रतिनिधियों को जनता और सामूहिक कार्यक्रमों में आशातीत महाशय का स्वार्थ समझा। किन्तु सुधार और सफलतायें प्राप्त हो रही हैं।

टेलर बाल्डी ने बताया है कि आलेखित और ई–मेल या ई–सन्देश अर्थात सोशल मीडिया वार्तालाप में सबसे बड़ी कमी यह है कि इन वार्ताओं में भागीदार वार्ताकारों के चेहरे पर आये सहमति असहमति, विश्वास अविश्वास प्रसन्नता अप्रसन्नता तथा अन्यान्य मनोभावों का प्राकटय नहीं हो पाता जो विषय वस्तु को और भी समर्थ रूप में समझने के लिये अति आवश्यक है। सही भी

है, वार्ता के समय नयन भी कुछ कहते हैं और बेयन भी कुछ कहते हैं। बोलने का ढंग, सुनने का ढंग अर्थात पूरे शरीर का ही वार्ता में योगदान होता है, जिसे हम अंग्रेजी में Body Language के नाम से जानते हैं।

'वार्ता के समय के दृश्य संकेतों का स्वाभाविक आदान–प्रदान हमारी सन्मुख वार्ता का सम्पूरक होता है, बहुत सी बातें जो हमें वाणी और लेखन में अधूरी सी लगती है वे चेहरे के मनोभावों से स्पष्ट हो जाती हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से पाया गया है, कि इस समय मस्तिष्क के दर्प–न्यूरॉन क्रियाशील होते हैं, जब हम भावुक होते हैं या अन्य लोगों को भावुक होते देखते हैं। इसको दूसरी भाषा में हम सहानुभूति (Empathy) कह सकते हैं। और इस प्रकार हम एक दूसरे को ठीक से समझने में सक्षम होते है।

अतः आइये अब हम उन सब पहलुओं पर विधिवत विचार करें जिनके द्वारा बात–चीत अथवा वार्तालाप की कला को समुचित विकसित किया जाता है।

वार्तालाप का प्रारम्भ कैसे हो ?

यदि किसी अजनबी से बातचीत करना हो तो वास्तव में प्रारंभिक तौर पर यह एक जटिल कार्य है। कुछ बात का विशेष ध्यान रखना होता है। यदि वार्ता किसी विषय पर अथवा योजना के अनुसार होनी है तो कुछ आसानी हो सकेगी। तब भी यह ध्यान देना होगा कि बात प्रारम्भ कौन करेगा ? सामान्य अभिवादन के उपरान्त यदि आप वार्ता पर आमंत्रित हैं तो दूसरे पक्ष से प्रारंभिक प्रश्नों की प्रतीक्षा करें और अपना उत्तर विश्वास के साथ यथा वांछित लघु अथवा दीर्घ वाक्यों से दें। यथा संभव वाक्य छोटे किन्तु सार्थक अर्थ वाले हों तो अच्छा होता है। Art of Small Talks के लेखक 'डेबरा फाइन' कहते हैं कि Small Talk is the appetizer for any deeper relationship-कहा भी जाता है कि ज्यादा बोलने में गलती की संभावना बढ़ जाती है।

यदि किसी अपरिचित से परिचय करने अथवा वार्ता की आवश्यकता समझते हुए बात होती है तो सर्वप्रथम क्षमा कीजिये कहकर उनका ध्यान आकर्षित करें और फिर "नमस्कार जी !", "मैं अमुक, क्या मैं आपसे कुछ बात कर सकता है।" उत्तर हाँ में मिलने पर ही बात बढ़ायें, अन्यथा धन्यवाद! चलिये फिर कभी" कहकर प्रतीक्षा करें या वार्ता का समय लें। यदि बात होती है तो परिचय और उनकी रुचि और अपनी आवश्यकता के अनुरूप वार्ता करें और भागीदार वार्ताकार को भी पर्याप्त अवसर दें। बात यह ही हो जिनमें दूसरे पक्ष को भी रुचि हो, केवल अपना ही न होकते रहें।

परिचय और वार्ता प्रारंभ के समय "आप कैसे हैं? जैसे वाक्यों के साथ कुछ जैसे क्या कर रहे हैं? कहीं यात्रा की क्या? कौन सी नई पुस्तक या कहानी पढ़ी'? 'आपके कार्यालय का काम कैसा चल रहा है? पूरक प्रश्नों का काम करते हैं, जो व्यक्ति को थोड़ा खुलकर बात करने का अवसर देते है। अतः स्थिति–परिस्थिति के अनुसार बिना डर के विश्वास के साथ वार्ता प्रारंभ करें।

वार्ता बाधकता से बचें:

हमारा सबका अनुभव कहता है कि कभी–कभी कोई ऐसी बात कह दी जाती है कि बात–चीत के मध्य सन्नाटा छा जाता है या वार्ता विल्कुल ही भंग हो जाती है। कभी–कभी किसी अवांछित परिदृश्य को टालने के लिये यह उचित कदम भी होता है, कभी महत्वपूर्ण बार्ता भी अशोभनीय ढंग से समाप्त हो जाती है। अतः बात–चीत स्वाभाविक, शान्त वातावरण में अर्थपूर्वक तथा धैर्य के साथ उद्देश्य अनुगत होना श्रेयस्कर होता है। मन हल्का करने वाली कुशल–क्षेम और गल्प बात–चीत में भी ठेस पहुंचाने वाले व्यंग और आक्षेपों से बचना चाहिये।

कुछ बिन्दुओं का विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है, यथा वार्ता के मध्य फोन (सेल फोन) पर उँगली चलाते रहना, उसी पर दृष्टि बनाये रहना या सेल फोन पर बात करना वार्ता में आपकी अरुचि या दूसरे को अपमानित करने का भाव दर्शाता है। यह ऐसे ही है जैसे कि आप किसी को कह दें 'बस करो' (Shut up) यदि वार्ता के मध्य फोन बजता है तो या तो तत्काल बन्द कर दें और यदि आवश्यक हो तो 'क्षमा कीजिये, मैं अभी आता हूँ कहकर अलग बात करें। अच्छी तो यह है कि वार्ता के समय फोन बन्द रहे या शान्त रहे। कभी भी अति व्यक्तिगत प्रश्न जैसे क्या आप विवाहित हैं ?' 'आपका वेतन कितना है । 'किस कंपनी के शेयर लिये है? आदि अनपेक्षित प्रकार के सवाल (Close ended Questions)

यदि वार्ता के विषयगत आवश्यक हो तो अनुमति लें– 'क्या मैं आपसे कुछ व्यक्तिगत जानकारी ले सकता है'. तब सावधानी पूर्वक जितना आवश्यक हो उतना ही चर्चा करें। सदैव निराशात्मक व ऋणात्मक चर्चाओं से बचना चाहिये। परिधान, मकान, व्यवसाय आदि के विषय में तुलनात्मक टिप्पणियों से भी बचना चाहिये। विशेष ध्यान दें कि यदि आपके सन्मुखी भागीदार की भाव–भंगिमा अस्वीकृति और अरुचि धारणा वाली है तो तुरन्त बात–चीत की दिशा बदल दें।

नैतिक, नैत्यिक' और नैजिक बात चीत:

दिन प्रतिदिन परिवार में और अपने सहकर्मियों के साथ होने वाले वार्तालाप को भी पर्याप्त महत्व दिया जाना चाहिये। इसे हल्के में कभी न लें बल्कि जीवन में होने वाले वार्तालाप में इसी प्रकार के वार्तालाप का भाग लगभग 70 प्रतिशत होता है। प्रायः देखा गया है कि अति निकटता में सामान्य अभिवादन (हेलो, नमस्ते राम–राम) भी नहीं होता और शिष्टाचार के प्रति हम बहुत सचेत नहीं दिखते। बातें भी आम औपचारिकताओं से परे होती है। नैकट्य भाव में हमसे सामान्यतः ये त्रुटियाँ होती हैं। यदि हम इन सामान्य संबंधों में शिष्टाचार और औपचारिकताओं पर उपयुक्त ध्यान दें तो सम्बन्धों को और अधिक मधुर और दीर्घजीवी बना सकते हैं। अतः स्वाभाविक सावधानियां बरत कर एक सन्तुष्ट और सफल पारिवारिक और मित्रवत जीवन जी सकते हैं। यथा छोटे–बड़े, स्त्री–पुरुष, भिन्न अभिन्न सभी के साथ वार्ता से पूर्व यथा योग्य अभिवादन/स्वागत वन्दन का विधिवत पालन करें और तब औपचारिक अथवा अनौपचारिक बात–चीत का आनन्द ले मनोवैज्ञानिक जॉन होइस्टाड कहती है कि अति निकट और दैनन्दिन साथियों के सम्बन्धों में प्रायः औपचारिकताये भुला दी जाती हैं, जो उचित नहीं हैं। दूसरी बात जिस पर वह विशेष जोर देती हैं वह है गंभीरता से 'सुनना'। प्रायः 'देखा जाता है कि हम वार्ताओं के दौरान 'बजाय दूसरों की बात गंभीरता से सुनने के और समझने के, अपने बोलने के लिये आतुर रहते हैं और उन्हें क्या कहना है उसी विषय में अपना मन मस्तिष्क व्यस्त रखते हैं। इस कारण यथोचित उत्तर या कथन न कहकर प्रायः बेतुकी बातें कह जाते हैं। यदि आप को वार्ता के दौरान ऐसा भटकाव प्रतीत हो तो अपने को सावधान कर सुनने की स्थिति में ले आने का प्रयास करें तब आप पायेंगे कि आप अपनी बात कैसे सटीकता से रख पाते हैं।

बालक (बेटा/बेटी) को बालक समझ कर या पत्री को मात्र घरेतिन समझकर उनकी कही बातों को हल्के में न लेकर उचित ध्यान दें। प्रेम से उत्तर, प्रोत्साहन, शाबासी, धन्यवाद तथा आवश्यकता पड़ने पर झप्पी (hug) लेने–देने में न चुकें। आपके ये व्यवहार आप में और उनमें एक दूसरे कि प्रति विश्वास और प्रेम बढ़ाते हैं। आप पायेंगे कि जैसे ही आप का आत्म–प्रकटीकरण (self-disclosure) होता है वैसे ही वे भी आप के साथ आत्मीय होंगे और खुलकर वार्ता करेंगे।'

कभी कभी मात्र 'कैसे हो?..', 'कैसे हैं?...', 'क्या हाल है?....' कहके आगे बढ़ जाते हैं; अच्छा हो केवल औपचारिकता तक सीमित न रहकर अपने शब्दों अथवा वाक्यों में कुछ पूरक प्रश्नों या शब्दों के साथ आत्मीयता प्रदर्शित करें। जैसे 'पढ़ाई कैसी चल रही है?'... 'परीक्षा कब है?... 'तैयारी अच्छी है न?...' या 'आपका काम (व्यापार) कैसा है?...', 'कोई नया प्रोजेक्ट प्रारंभ किया है... आदि। ऐसे वाक्यांश कि 'मैं जानता हूँ कि आप कैसा अनुभव कर रहे हैं (I know exactly how do you feel) के बजाय 'अच्छा', 'बहुत अच्छा' या 'बड़ा अच्छा लगा', 'और बताओ', 'जरा ठीक से समझाओ' आदि का प्रयोग उत्साहवर्धक होता है। मनोचिकित्सक टेलर बाल्ड्री और शेफर्ड कर कहना है कि उत्तेजित अथवा बाधित होते वार्तालाप को सुगम बनाने हेतु कभी कभी स्थान परिवर्तन भी लाभप्रद होता है। अतः स्थिति–परिस्थिति के अनुसार घर अथवा दफ्तर के बाहर कहीं बगीचे या रेस्टोरेन्ट आदि में जाकर वार्ता सम्पन्न करना हितकर होता है। उनका कथन है कि Novelty stimulates the production ofdopamine, a feel good neurotransmitter- That can help in sharing talks, अर्थात वार्ता में विनम्रता और सदाशयता सुखद अनुभव और सहज भागीदारी वाले डोपामाइन – न्यूरॉन उत्पन्न करता है।

सुनने की वृत्ति आवश्यक :

जैसा कि पूर्व में भी संकेत किया गया है, हम प्रायः

किसी न किसी कारण से (यथा–कार्यालयी अथवा विपणन असन्तुष्टता, अनपेक्षित व्यवहार, भोजन–भजन की अनियमितता अथवा अन्यान्य स्थिति परिस्थिति के वशीभूत होने से) अपने अन्तर्कलह अथवा पूर्वानुगठन में अनावश्यक रूप से व्यस्त रहते हैं और अर्न्तमन में चलता यह परोक्ष वैचारिक आदान प्रदान वार्तालाप के समय हमें संकेन्द्रित होकर श्रवण नहीं करने देता। कभी कभी ऐसा भी होता है कि हम दूसरों के वचन सुनने के बजाय अपने बोलने और क्या बोलना है यह सोचने में ही व्यस्त रहते हैं। यहाँ तक कि कभी–कभी ऐसी अधीरता में हम दूसरों को पूरा न सुनकर उनको वार्ता के बीच में हस्तक्षेप कर बैठते हैं। यह व्यवहार परिचर्चा को तो प्रभावित करता ही है साथ ही अशिष्टता को भी दर्शाता है। अतः धैर्यपूर्वक और ध्यान पूर्वक सुनना सफल बात–चीत के लिये विशेष महत्व रखता है। हमें इस आदत का विकास करना ही चाहिये।

व्यापार प्रबन्धन सलाहकार ओरी ब्राफमेन और मनोवैज्ञानिक रोग क्राफमैन ने अपनी पुस्तक Click: The Magic of Instant Connection! में इस बात पर विशेष जोर दिया है कि हम कैसे वार्तालापः में सही मायने में जुड़े रह सकते हैं? इस हेतु उन्होने गंभीरतापूर्वक श्रवण वृत्ति के साथ–साथ चार और सुझाव दिये हैं जिन्हें Brafman's Suggestions का नाम दिया गया है। यथा–

1. स्वाभाकि रुचि बनाएँ (Be Intentional):

वार्तालाप या बातचीत में व्यस्त होने के पहले अपने मन में, मस्तिष्क में वार्ता के प्रति इच्छा (रुचि) की बलवती बनाये एवं अपने सम्पूर्ण चेतना को संजोते हुये अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करें। वे कहते हैं कि यह हमारी आदत बननी चाहिये जैसे कि हम काफी हाउस का द्वार खोलते समय गहरी साँस लेते हैं या सत्संग और सम्मेलनों में अपना सेल फोन आदतन बन्द करते हैं।

2. सावधानी बरतें (Be Attentive):

प्रत्येक स्थान या घटना क्रम से प्रस्तुति वार्ता हेतु ध्यानस्थ और सावधान हों तथा अन्य लोगों को भी अपनी गंभीरता, संलग्नता और दैहिक प्रतिक्रियाओं से इस का आभास करायें। अन्य भागीदारों को लगना चाहिये कि आप गंभीर और रचनात्मक वार्ता हेतु तत्पर है।

3. संयमी रहें (Be an Equal):

अपने को प्रथम अथवा द्वितीय स्थान पर (Avoid one up or one down advisor) विषय रखने से रोकें जब तक कि प्रस्तुति वार्ता का प्रारम्भ स्वयं आप ही को न करना हो। बिना किसी पूर्व विचाराग्रह अथवा पूर्व धारणाग्रस्त हुये गंभीरता और पूर्ण चेष्टा के साथ पहले सुनिये, समझिये और तब विचारपूर्वक विषय रखिये।

4. नैकटय (निकटता) बनायें (Be Your Own Person)

कैसे प्रत्युत्तर करना है?" के विचार से पूर्व ग्रस्त नहीं। अपने मनोभावों को उत्तेजति न होने दें, बल्कि, दूसरों के विचारों और तथ्यों को गंभीर श्रवणता प्रदान करने की मनोवृत्ति का प्रदर्शन करें। सन्मुख वक्ता छोटा है या बड़ा, जूनियर या सीनियर, पुरुष अथवा स्त्री उसकी वार्ता प्रस्तुति के समय उसे समस्तरीय व्यक्तित्व का आभास दें। उसकी बातों को सम्मान दें तब आप देखेंगे कि दूसरे भी उसी भाव–भावना के साथ आपके साथ व्यवहार करते दिखेंगे।

शारीरिक भाषा भी महत्वपूर्ण :

शारीरिक भाषा सन्मुख वार्ता को प्रभावी बनाती है। यह वास्तव में अमौखिक संचार का भी एक रूप कहा जा सकता है। शारीरिक मुद्रा, संकेत (इशारे), आँखो की गति, विषयवस्तु के अनुसार हाथ व उँगली का प्रदर्शन, खड़े होने व चलने मुड़ने जैसी क्रियायें वार्ता या संचार का बहुत कुछ व्यक्त करती हैं। मनुष्य जाने–अनजान ऐसे संकेत भेजता भी है और समझता भी है। शारीरिक हलचल और भाव भंगिमा से सन्मुख वार्ता/संचार में बहुत कुछ जोड़ने घटाने के अवसर प्राप्त होते हैं जिनका ई–मेल अथवा टेक्स्ट संदेशों में अभाव रहता है।

जो नेवारी (Joe Navarro) एक प्रसिद्ध FBI प्रतिनिधि रहे हैं। अमौखिक सन्देशों के विश्लेषण में उन्हें प्रवीणता प्राप्त थी। उन्होंने अपनी पुस्तक "What Every Body is Saying" में विश्वास व्यक्त किया है कि मस्तिष्क का Limbic System भावाभिव्यक्ति और व्यवहार को नियंत्रित करने और कुछ निश्चित अनचाहे भावों को उत्तेजित करने में सहायक होता है। इसे उन्होंने "Freeze Flight Fight" का नाम दिया है। यदि आप इस तकनीकी से वाकिफ है, तो शारीरिक भाषा के आधार पर

व्यक्ति की गुप्त गतिविधि को भी समझ सकते हैं। शोधकर्ता अल्बर्ट मेहराबियन के अनुसार मानव संचार का 93% भाग शारीरिक भाषा और परा–भाषायी संकेतो से मिलकर बना होता है, जबकि शब्दों के माध्यम से कुल संचार का 7% भाग ही सन्देश बनता है, अन्य अनुसंधानों के अनुसार 60–70 प्रतिशत भाग अमौखिक व्यवहार से प्रकट होता है।

इस प्रकार शरीर की भाषा किसी के रवैये और उसकी मनःस्थिति अर्थात आक्रमकता, ऊब, आराम की स्थिति सुख, हीनता, मनोरंजन आदि भावों के संकेत दे सकती है। प्रमुख शारीरिक भाषा संकेतों के उदाहरण निम्नवत हो सकते हैं –

(क) सुमधुर/सुगम अभिव्यक्ति :

- आगे को झुकना अथवा गर्दन झुकाना (हल्के से आगे को हिलाना वार्तालाप में रुचि दर्शाता है।
- खड़े अथवा बैठे, बातचीत के दौरान बाँह पकड़ना अथवा कन्धे पर हाथ रखना संचार में विश्वासको प्रकट करता है।
- दूर देखना या वक्ता पर ध्यान केंद्रित करना भी वार्ता में आनन्द को दर्शाता है जो वार्ताकार को आने वाली रुकावट के समय अपने विषयवस्तु को सोचने का अवसर देता है।

(ख) ऊब अथवा दुर्गम अभिव्यक्ति:

- जल्दी जल्दी आँख झपकाना अच्छे संकेत नहीं देता।
- ओठ बिचकाना अथवा ओठ भींचना भी अशोभनीय है।
- कन्धों को उचकाना ऊब अथवा अरुचि का द्योतक है।

(ग) असहजता, भय और संकोच :

- पैरों का निचला भाग (Lower limb) स्पष्टतया वार्ताकार का प्रथम और महत्वपूर्ण संकेतक (responder) है। इनका कम्पन करना घबराहट और अविश्वास दर्शाता है।
- कुर्सी पर बैठते समय टाँग पर टाँग (Crows lay) चढ़ा कर बैठना वार्ता में रुचि दिखाता है तो पैर हिलाना अधीरता और घबड़ाहट को दर्शाता है।
- बात–चीत करते करते दरवाजे की तरफ पैर करना या मुड़ना वार्ता से विलग होने की इच्छा को बताता है।

वार्तालाप का सम्मानजनक अन्त, वार्ता से भी अधिक महत्वपूर्ण है:

यदा–कदा देखा जाता है कि बात–चीत बड़े तनाव पूर्ण वातावरण में समाप्त होती है। यह एक सुखद स्थिति नहीं कही जा सकती है। प्रयास यह होना चाहिये कि वार्ता में किसी की भी भावना आहत न हो और किसी के भी मान अपमान की स्थिति न बने। कभी भी तनाव और क्रोध की स्थिति में बात–चीत से बाहर न हों। वार्ता से कभी भी जल्दी या वार्ता को मध्य में छोड़ने से बचें। किसी कवि ने कहा है–"वो अफसाना जिसे मंजिल तलक लाना न हो मुमकिन, उसे एक खूबसूरत मोड़ देकर छोड़ना बेहतर।" अर्थात यदि बार्ता और मतभेद सीमा से परे जाते दिखे तो विषय परिवर्तन, स्थान परिवर्तन और स्थिति–परिस्थिति के अनुसार सर्व–सुगम वार्ता के माध्यम से वार्ता स्थगन ही उपयुक्त कदम होना चाहिये।

लेखक माइक चले (Mike Bechtle) के अनुसार वार्ता के सुखान्त के लिये बात–चीत/वार्तालाप का उद्देश्यपूर्ण, सामूहिक सद्भाव, ईमानदार चर्चा और सुफल और सुखद अन्त हेतु संकल्पित होना परम आवश्यक है।

व्यक्तिगत रूप से किसी भी वार्तालाप से विलग होने के लिये माइक ने सुझाया है कि–

- उद्देश्य परक बातों में उद्देश्य पूर्ण होने पर विनम्रता और कृतज्ञता के साथ ही वार्ता से जाना चाहिये।
- यदि छोटे समूह में वार्ता चल रही है और आप अलग होता चाहते हैं तो एक दो नये भागीदारों के आने पर धीरे से आवश्यक अभिवादन के साथ अलग हुआ जा सकता है।
- बातों के बीच अधर में किसी कारण से पृथक होना पड़ रहा है तो अपना समीक्षात्मक पक्ष रखकर और मुख्य बिन्दु पर प्रभावी बक्तव्य के साथ अलग हो सकते हैं। किन्तु जब भी विलग हो या होना पड़े, आवश्यक अभिवादन के साथ ही हो।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

''गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का मतलब ऐसी शिक्षा है जो हर बच्चे के काम आये। इसके साथ ही हर बच्चे की क्षमताओं के सम्पूर्ण विकास से समान रूप से उपयोग हो।''

हर बच्चे के लिए उपयोगी

ऐसी शिक्षा बच्चे की वैयक्तिक विभिन्नता का ध्यान रखने वाली होगी। हर बच्चे के सीखने का तरीका अलग–अलग होता है। ऐसे में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हर बच्चे के सीखने के तरीको को अपने में समाहित करने वाली होगी ताकि क्लास में कोई भी बच्चा सीखने के पर्याप्त अवसर से वंचित न रह जाये। इसके साथ ही हर बच्चे को विभिन्न गतिविधियों, खेल और प्रोजेक्ट एक के माध्यम से उनको सीखने का मौका देने वाली भी होगी

ऐसी शिक्षा में चीजों को समझने (अर्थ निर्माण) के ऊपर विशेष फोकस होगा। बच्चों को चर्चाओं के माध्यम से अपनी बात कहने और ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में भागीदारी का मौका मिलेगा। इस नजरिये से संचालित होने वाली कक्षाओं में गतिविधियों और विषयवस्तु में एक विविधता होगी। शिक्षक के नजरिये में लचीलापन होगा। वे हर बच्चे को साथ–साथ सीखने के अतिरिक्त खुद के प्रयास से भी सीखने का पर्याप्त मौका देंगे ताकि बच्चों का आत्मविश्वास बढ़े।

जीवन कौशलों का विकास करे

ऐसी शिक्षा में बच्चों के सामने समस्या समाधान की दिशा में सोचने वाली परिस्थितियां रखी जाएंगी ताकि बच्चा ऐसे जीवन कौशलों का विकास कर सके जो आने वाले भविष्य में उसके काम आयेगा। इसके लिए क्लास में एक ऐसा माहौल होना जरूरी है जहाँ बच्चे भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस करें और जहाँ उनकी रचनात्मकता की अभिव्यक्ति के लिए भी पर्याप्त अवसर उपलब्ध हो। स्कूल में ऐसे माहौल के लिए समुदाय के साथ अच्छी सहभागिता की जरूरत होगी क्योंकि बगैर समुदाय के सहयोग के ऐसे सकारात्मक माहौल का निर्माण करना स्कूल के लिए संभव नहीं है, क्योंकि स्कूल भी समुदाय का एक हिस्सा है। समुदाय की तरफ से मिलने वाले सकारात्मक सहयोग से ही स्कूल में जेन्डर के आधार पर होने वाले भेदभाव को समन किया जा सकता है। स्कूल में पढ़ने वाली लड़कियों को भावनात्मक संबल दिया जा सकता है। उन्हें आगे की शिक्षा के लिए प्रेरित किया जा सकता है। भारत में भी बालिका शिक्षा के ऊपर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

गुणवतापूर्ण शिक्षा में बच्चों को चुनाव का अवसर दिया जाता है। ऐसे माहौल में एक शिक्षक सुगमकर्ता के रूप में काम करता है। कक्षा के केंद्र में बच्चा होता है। बच्चे का सीखना सबसे ज्यादा मायने रखता है। ऐसे में एक बच्चे को पूरा सम्मान मिलता है कि वह आत्मविश्वास के साथ क्लास में अपनी बात बगैर किसी झिझक व संकोच के कहे।

सीखने का बेहतर माहौल

क्लासरूम में पढ़ाई का काम सुचारू ढंग से होने के लिए बच्चों की बैठक व्यवस्था और कमरे में साफ–सफाई का होना भी जरूरी है। गंदे और आपाधापी वाले माहौल में किसी बच्चे के लिए अपनी पढ़ाई के ऊपर ध्यान केंद्रित करना संभव नहीं रह जायेगा। ऐसे में जरूरी है कि क्लास में पढ़ने का काम सुचारू ढंग से होने के लिए बुनियादी माहौल उपलब्ध 'हो। आखिर में कह सकते हैं कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एक बहुआयामी संप्रत्यय है।

गुणवत्ता पूर्ण

- ***हर बच्चे के लिए उपयोगी।***
- ***जीवन कौशलों का विकास करें।***
- ***सीखने का बेहतर वातावरण।***

फूलों की सुन्दरता

किसी जंगल में एक फूल का पौधा उग आया। इस फूल के बीज को कोई चिड़िया कहीं से ले आई थी। उसने वह बीज उसी जंगल में गिरा दिया था। हल्का सा पानी बरसा हवा वही और उस बीज से पौधे का अंकुर निकल पड़ा और पौधा बन गया। कुछ दिनों बाद उसमें टेसू निकल आये और टेसुओं के बाद बहुत से फूल खिल गए। वैसा पौधा उस जंगल में एक भी नहीं था। एक रात स्वर्ग की देवी उस जंगल में घूमने आई। जंगल में भला और होता क्या है कि देवी वहाँ देर तक ठहरती? मगर फूलों ने उन्हें अपनी ओर खींच लिया। उन फूलों की सुन्दरता देखते ही बनती थी। आस–पास उसकी सुगन्ध फैल रही थी। स्वर्ग की देवी ने सोचा क्यों न इन फूलों को जूड़े में खोंस जूड़े को सुन्दरता बढ़ाई जाए। उन्होंने फूलों को तोड़कर अपने जूड़े में लगा लिया। उनका जूड़ा बहुत सुन्दर दिखने लगा। जब वह स्वर्ग जाने लगों तो फूलों ने इठला कर अपने पौधे की जड़ से कहा "हम देवी के जूड़े में लगकर स्वर्ग जा रहे हैं और तू मिट्टी ही चाटती रह गई।" फूलों के इन शब्दों को सुनकर जड़ ने मुस्कुराते हुए कहा, "ठीक है। ईश्वर करे तुमलोग स्वर्ग में देवी–देवताओं के साथ रहो। यह देख कर तो मुझे खुशी ही होगी। मगर यह मत भूलना कि मैंने मिट्टी से रस खींच–खींच कर तुम्हें पिलाया है। मैं मिट्टी चाटती रही और तुमलोगों को पालती रही।" फूल देवी के जूड़े के साथ स्वर्ग जा रहा था मगर अपने घमण्ड भरे वचन पर बेहद लज्जित था।

- **गुरु तेरे उपकार का कैसे चुकाऊँ मोल, लाख कीमती धन भला, गुरू हैं मेरे अनमोल ।।**
- **मेरे जैसे 'शून्य' को 'शून्य' का ज्ञान बताया, हर अंक के साथ 'शून्य' जुड़ने का महत्व बताया ।।**
- **शिक्षक के पास ही वह कला है , जो मिट्टी को सोने में बदल सकती है ।।**
- **अक्षर-अक्षर हमें सिखाते शब्द-शब्द का अर्थ बताते, कभी प्यार से कभी डाँट से जीवन जीना हमें सिखाते ।।**

आइये! बनाए अपना संतुलित जीवन

कमल कुमार (प्रदेश निरीक्षक)
जन शिक्षा समिति उ० प्र०

मन बुद्धि और ज्ञानेन्द्रियाँ ये ज्ञान प्राप्ति के मुख्य द्वार हैं। बुद्धि से विद्या प्राप्त होती है और सद्बुद्धि से विद्या का सार। जैसे अंधेरे में उजाले की, अभावों में सहयोग की, और समस्याओं में सुझावों की वैसे ही जीवन भटकाव के समय में मार्ग दर्शन की, ठीक उसी प्रकार श्रद्धा के बिना ज्ञान असर नहीं करता। जब हम किसी व्यक्ति से पूछते है कि आप कौन हैं ? तो आम तौर पर व्यक्ति अपने व्यवसाय का परिचय देते हुए कहता है–मैं डॉक्टर हूँ इंजीनियर हूँ, प्रधानाचार्य हूँ, व्यापारी हूँ, वकील हूँ सम्भाग निरीक्षक हूँ आदि अब सोचने की बात यह है कि व्यक्ति केवल डॉक्टर, इंजीनियर, प्रधानाचार्य, व्यापारी, वकील, सम्भाग निरीक्षक ही तो नहीं हैं। वह तो और भी बहुत कुछ है।

वह अपने बच्चों का पिता है, पत्नी का पति है, माता का पुत्र है और बहिन का भाई है। डॉक्टर के पास जाता है तो पेशेन्ट भी है, यात्रा करता है तो यात्री भी है, खेल का शौकीन है तो खिलाड़ी भी है और किसी से माल खरीदता है तो ग्राहक भी है। इस प्रकार डॉक्टर, इंजीनियर, व्यापारी, प्रधानाचार्य के साथ–साथ अनेकानेक भूमिकाएं भी निभाता है। कोई भी मानव केवल एक ही भूमिका के सहारे जीवन नहीं काट सकता। अनेक प्रकार के पार्ट मनुष्य को निभाने होते हैं।

झुकाव से जब पलड़ा झुकता है-अब प्रश्न उठता है कि जब एक भूमिका से काम नहीं चल सकता हतो वह केवल एक भूमिका का लेवक अपने पर क्यों लगता है ? यह उसका अज्ञान और अभियान दोनों को प्रदर्शित करता है। अपने समाज में अपनी पहचान इसी लेवल से बना ली है। इस प्रकार के लेवल से मनुष्य की मानसिकता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बार–बार उसे अपने उस व्यवसाय नाम, पद को सुनकर उस व्यवसाय या पद से गहरा लगाव व झुकाव हो जाता है। जब झुकाव हो जाता है तभी पलड़ा एक तरफ झुक जाता है तो दूसरी तरफ से उखड़ भी जाता है, वह अपनी दूसरी भूमिकाओं से लगभग उखड़ा रहता है। उन्हें महत्व कम देने लगता है, उनकी उपेक्षा करने लगता है, साथ ही उनके प्रति अपने कर्त्तव्यों का उल्लंघन करने लगता है।

फुर्सत नहीं है-(I have no time) कई बार देखने में आता है कि पत्नी बीमार है, तो व्यवसायिक पति कहता है कि यह लो पैसे डॉक्टर को दिखाओ, मेरे पास समय नहीं है बेटा कहता है, पिताजी! आचार्य जी ने आपको याद किया है तो कहता है ये लो पैसे, शुल्क जमा कर देना, किताबें–कापियाँ खरीद लेना, आचार्य जी से कहना मिलने का मेरे पास समय नहीं है। बूढ़ी माँ कहती है–बेटा! दो मिनट मेरे पास बैठ! बेटा कहता है माँ! नौकर का प्रबन्ध कर दिया है। वह सेवा कर दिया करेगा। मुझे दुकान से फुर्सत नहीं है।

छिन जाता है सुख रूपी धन-चूंकि यह प्रधानाचार्य है। प्रधानाचार्य का लेवल उस पर लगा है, विद्यालय को व्यवस्थित करने तथा शिक्षकों व छात्रों को दिशा दृष्टि देने में 12 घण्टे लगते हैं। बाकी का समय भी अप्रत्यक्ष रूप में उसका ही चिन्तन करने में लग जाता है। अब सवाल उठता है कि वह पिता का रोल, पति का रोल, भाई का रोल, कब निभायेगा ? समय नहीं निकलता तो पत्नी, पुत्र, भाई, बहिन, माँ आदि के साथ सन्बन्धों में वो मिठास नहीं आ पाती है। वह सफल प्रधानाचार्य। व्यापारी तो बन जाता है परन्तु पति, पिता, पुत्र व भाई आदि के रूप में

असफल हो जाता है। व्यापार उसे केवल धन देता है। वह धनी तो बन जाता है परन्तु परिवार का रूपी सुख रूपी धन उससे छिन जाता है। मन की शान्ति, खुशी, आनन्द जो भिन्न–भिन्न सम्बन्धों से मिलना था, उससे वो वंचित हो जाता है। इसलिए अधिकतर आनन्द व खुशी को व गलत जगह लगाता है।

सब वाह वाही करें-मैं कौन हूँ ? पहले इस प्रश्न का सही–सही उत्तर जानो। मैं डॉक्टर हूँ, वकील हूँ प्रधानाचार्य हूँ , व्यापारी हूँ। यह इस प्रश्न का सही उत्तर नहीं है। सही उत्तर है–डॉक्टर की भूमिका निभाने वाली मैं एक आत्मा हूँ। दिन भर में अनेक भूमिकाएं निभाती हूँ। हर भूमिका के साथ मुझे न्याय करना है ताकि हर रोल पर मुझे वाह वाही मिले। पति का रोल प्ले करूं, तो पत्नि वाह वाही करे, पिता का रोल प्ले करूं तो पुत्र–पुत्री वाह वाही करे। पुत्र का रोल प्ले करूं तो माता–पिता वाह वाही करे। तब मैं सृष्टि मंच पर सफल कलाकार कहलाऊँगा। इसके अभाव में असफल कलाकार ही माना जाऊँगा।

विराम चिन्ह लगाना सीखे-लौकिक पढ़ाई में विराम चिन्हों का बड़ा महत्व है। वाक्य पूरा होने पर विराम चिन्ह लगाने से भाषा सुन्दर बनती है। पढ़ने वालों को अलग–अलग अर्थ समझ में आता है, नहीं तो एक वाक्य जब दूसरे से मिल जाता है तो गड़बड़ हो जाती है। आध्यात्मिकता का मूल मंत्र भी यही कहता है कि हर भूमिका निभाने के बाद विराम चिन्ह लगा दो। ताकि अगली भूमिका के साथ न्याय हो सके। वकील, इंजीनियर, प्रधानाचार्य के नाते आपकी भूमिका यदि 8.00 बजे पूरी हो गयी तो वहाँ का कार्य समाप्त करके फुल स्टॉप लगा दीजिये और घर जाकर पिता पुत्र की भूमिका निभाईये। इससे आप स्वयं हलके रहेंगे और कर्त्तव्य परायण भी रहेंगे तथा हर एक को सन्तुष्ट भी कर सकेंगे। ''जिन संबंधों को अपने से जोड़ लिया है पर उनकी सही देख रेख नहीं होती है तो यह ऐसे ही हैं जैसे व्यर्थ की रस्सी उनके ओर हमारे बीच बंध गयी है जिसे हम काटते भी नहीं और सही दिशा में चलने के लिए सहयोग भी नहीं करते। सही प्रकार से सम्बन्ध न निभा पाने के कारण कहासुनी, मनमुटाव, अनवन, असन्तोष चलता रहता है।'' यदि हम कर्त्तव्य नहीं निभाना चाहते है तो रस्सी काट दें, उन सम्बन्धों को स्वतंत्र कर दें पर हम ऐसा भी नहीं करते। इस स्थिति में सम्बन्ध सुखदायी न रहकर दुःख दायी स्थिति में बदल जाते हैं।

आश्रितों से निभाएं-सिद्धान्त कहता है कि या तो सम्बन्ध जोड़ो नहीं और जोड़ते हो तो 20 नाखूनों का जोर लगाकर ही निभाओ। अपने छोटे से छोटे कर्त्तव्य को भी समर्पण के साथ निभाओ। संबंध निभाने में ही महानता है। आज पल में सम्बन्ध जोड़ने और पल भर में संबंध तोड़ने का खेल चल रहा है। यह भौतिकता की देन है! आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित सतयुगी दुनिया में हर रिश्ता टीकाऊ था। प्रसिद्ध ग्रन्थ रामायण में एक प्रसंग आता है कि रावण से तिरस्कृत होकर विभीषण जब राम की शरण में आया तो बहुतों ने उन्हें समझाया कि इस राक्षस जाति के व्यक्ति को शरण देकर झंझट में न फसें। इस बात को सुनकर प्रभु श्रीराम ने कहा, मेरी शरण या मेरे आश्रय में जो भी आता है अपना सब कुछ न्यौछावर करके भी मैं उसकी रक्षा करता हूँ।

भगवान को भी शरणागत वत्सल कहा गया है। आश्रित की रक्षा सबसे बड़ा धर्म है। अतः हम भी उपरोक्त प्रसंग से प्रेरणा लेकर अपने आश्रितों की प्रेम से जिम्मेदारियाँ उठायें। यदि आत्मा में शक्ति नहीं है तो आध्यात्मिकता द्वारा वह शक्ति भरें। इसके अर्थ है परमपिता परमात्मा से सम्बन्ध जोड़कर उनसे शक्ति प्राप्त कर पारिवारिक भूमिकाएं बखूबी निभायें। ईश्वरीय शक्तियाँ बहुरूपी हैं। बुराइयों से नाता तोड़ने की सामर्थ्य रखती हैं और अच्छाई से जुड़े रहने की सद्बुद्धि देती हैं। इन शक्तियों का प्रयोग स्वयं पर अवश्य करके देखें। जीवन को किसी भी दिशा में अत्यधिक झुकाने के बजाय सन्तुलन में चलें। सन्तुलन अर्थात बेलेंस से चलने वाले को ही बेलेसिंग मिलती है।

भारत माता है क्या ?

आजादी की लड़ाई के दौरान भारतमाता की जय का नारा लगाने वाले युवाओं से जवाहरलाल नेहरू ने एक बार पूछा था, यह भारतमाता है क्या? फिर स्वयं ही इसका उत्तर भी दिया था उन्होंने इस देश की करोड़ों–करोड़ों जनता ही भारतमाता है, इसलिए भारतमाता की जय का अर्थ इस जनता की जय है। फिर उन्होंने जनता की जय का अर्थ भी समझाया था – जनता की जय का मतलब होता है, जनता के सपनें, आशाओं, आकांक्षाओं की पूर्ति। मुझे लगता है जो नेहरू जी ने भारतमाता के संदर्भ में कहा था, वही सब भारत पर भी लागू होता है। आसेतु हिमालय और असम से राजस्थान तक फैला भू–भाग भारत का ही नक्शा बनाता है, लेकिन इस नक्शे में यदि देश की जनता का रंग नहीं भरा गया तो निष्प्राण रहेगा यह नक्शा। देश की जनता की आशाओं–आकांक्षाओं, सपनों संकल्पों के रंग ही इसे एक जीवंत राष्ट्र बनाते हैं। देश की 125 करोड़ जनता ही इस देश की परिभाषा है।

देश का इतिहास, देश की भाषाएँ, देश की संस्कृति, देश का अतीत, देश के आदर्श और मूल्य, इन सबका महत्त्व अपनी जगह है, उसे नकारना या कम आंकना गलत होगा। लेकिन हमारा वर्तमान और उसके आधार पर बनने वाला भविष्य ही हमारे होने को अर्थ देगा, हमारी परिभाषा को सार्थक बनायेगा।

प्रेरक प्रसंग

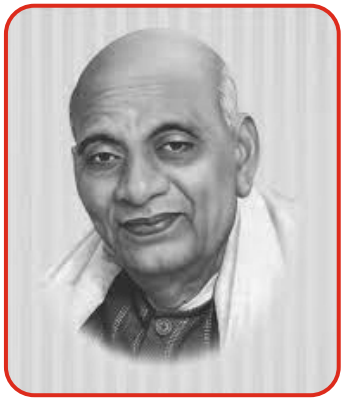

एक बार सरदार पटेल अदालत में मुकदमें पैरवी कर रहे थे। मामला गंभीर था, थोड़ी भी लापरवाही से क्लायंट को फाँसी हो सकती थी। तभी एक व्यक्ति ने आकर उन्हें एक कागज दिया। पढ़कर उनका चेहर उदास हो गया। फिर उन्होंने कागज जेब में रख लिया। कोर्ट की कार्यवाही समाप्त हुई और क्लायंट की जीत हुई वकील ने पूछा कागज में क्या था? तब सरदार पटेल ने बताया कि मेरी पत्नी की मृत्यु की सूचना थी।

सभी वकील ने आश्चर्य से कहा कि इतनी बड़ी घटना घट गई और आप बहस करते रहे।" सरदार पेटल ने उत्तर दिया, "उस समय मैं अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहा था। मेरे क्लायंट का जीवन मेरी बहस पर निर्भर था थोड़ी सी अधीरता उसे फांसी तक पहुंचा सकती थी तो वह जा चुकी थी। क्लायंट को कैसे जाने देता?'

ऐसे गंभीर और दृढ़ चरित्र के कारण 'लौहपुरूष' कहे जाते हैं।

हे जन्म भूमि भारत

हे जन्म भूमि भारत, हे कर्म भूमि भारत
हे वंदनीय भारत, अभिनंदनीय भारत !!
जीवन सुमन चढ़ाकर आराधना करेंगे
तेरी जनम जनम भर हम वंदना करेंगे
हम अर्चना करेंगे।
महिमा महान तू है, गौरव निधान तू है
तू प्राण है हमारी, जननी समान तू है
तेरे लिये जियेंगे, तेरे लिये मरेंगे
तेरे लिये जनम भर, हम साधना करेंगे
हम अर्चना करेंगे।
जिसका मुकुट हिमालय, जग जगमगा रहा है
सागर जिसे रतन की, अंजुलि चढ़ा रहा है।
वह देश है हमारा, ललकार कर कहेंगे
उस देश के बिना हम, जीवित नही रहेंगे
हम अर्चना करेंगे।
जो संस्कृति अभी तक दुर्जेय सी बनी है।
जिसका विशाल मन्दिर, आदर्श का धनी है
उसकी विजय–ध्वजा ले हम विश्व में चलेंगे
सुर संस्कृति पवन बन हर कुंज में बहेंगे
हम अर्चना करेंगे।
शाश्वत स्वतंत्रता का, जो दीप जल रहा है
आलोक का पथिक जो, अविराम चल रहा है
विश्वास है कि पल भर, रुकने उसे न देंगे
उस दीप की शिखा को, ज्योतित सदा रखेंगे
हम अर्चना करेंगे।
हे जन्म भूमि भारत, हे कर्म भूमि भारत
हे वंदनीय भारत, अभिनंदनीय भारत !!

गीत

युगों युगों से दुनिया चलती, जिसके दिव्य प्रकाश में।
पुरखों की वह पौरुष गाथा, अजर अमर इतिहास में।।
भारत के इतिहास में ।। धृत।।
अपना बल ही अपना वैभव, कुरुक्षेत्र मैदानों में
विजय लिखी थी खड्ग नोंक से, शक–हूणी तूफानों में
हार नहीं जय–विजय पराक्रम, पुरखों के पुरुषार्थ में
भारत के इतिहास में ।। धृत।।
राज्य सैकड़ों रहा विदेशी, पर अखंड यह परिपाटी
मिटा मिटाने वाला इसको, तेजोमय इसकी माटी
अमर–अमिट हिन्दू संस्कृति है, जल थल में आकाश में
भारत के इतिहास में ।। धृत।।
भौतिकता से त्रस्त विश्व की, एकमात्र भारत आशा
परमानन्द शान्ति की जननी, पूर्ण करेगी अभिलाषा
यत्न संगठित बने मील के, पत्थर विश्व विकास में
भारत के इतिहास में ।। धृत।।
व्यष्टि–समष्टि–सृष्टि जीवन में, कलिमल आहट मर्यादा
हिन्दू संस्कृति संस्कारों में, दूर करेगी हर बाधा
पतित पावनी संस्कृति गंगा, जनमन हृदयाकाश में।।
भारत के इतिहास में ।। धृत।।

प्रेरणा देने वाले, सूचना देने वाले, सच बताने वाले, रास्ता दिखाने वाले, शिक्षा देने वाले, और बोध कराने वाले सभी गुरु समान है।

साक्षर हमें बताते हैं, जीवन क्या है समझतो हैं, जब गिरते हैं हम हार कर तो साहस वही बढ़ाते हैं, ऐसे महान व्यक्ति ही तो शिक्षक-गुरु कहलाते हैं।

धरती माँ, मुझे माफ कर दो

तुम क्या समझते हो केवल तुम्ही रो रहे हो? मैं नहीं रो रही? मुझे दुःख नहीं हो रहा? मेरी वजह से इतनी जाने चली गयीं और मैं न रोऊ ऐसा हो सकता है क्या? माफी तो मुझे ही मांगनी पड़ेगी कि मैं इतनी जोर से हिली कि तुम सब हिल गए. गिर गए पर क्या करती मैं? तुम लोगों ने खुदाई कर–कर के मेरे शरीर पर इतने जख्म दिए फिर भी मैं सहती गयी लेकिन कितना सह पाती ? बहुत कोशिश की मैनें कि न तड़पूँ दर्द से, लेकिन अंत में सब जबाव दे गया। पीड़ा इतनी असहनीय हो गयी कि न चाह कर भी मैं तड़प उठी। शरीर में कंपन हो गया। इधर मैं दर्द से तड़पी और उधर तुम लोग उड़पने लगे। तुम्हारे मकान ढहने लगे। सड़कें फटने लगीं। मूस्खलन होने लगे। पहाड़ों की बर्फ भरभरा कर गिरने लगी। मैं कोशिश करती रही कि खुद को संभाल लूँ लेकिन तुम्हारे दिए जख्म इतने गहरे हो गए हैं कि दर्द थमने का नाम ही नहीं ले रहा। दर्द नहीं थम रहा तो मेरे शरीर में बार–बार बेचैनी हो रही है, मेरी बेचैनी के साथ तुम भी बेचैन हो रहे तुम न ऑफिस में ठीक से काम कर पा रहे हो, न घर ही चैन से सो पा रहे हो।

थोड़ी देर ऑफिस में बैठते ही नहीं कि मेरी हल्की से बेचैनी से तुम सब बाहर भागते हो। तुममें से हर कोई सबसे पहले बाहर निकल जाना चाहता है। उस समय तुम सारे रिश्ते–नाते भी भूल जाते हो। यह अलग बात है कि उस समय भी तुम अपने स्मार्टफोन को साथ लेना नहीं भूलते। ऐसा नहीं कि मैं अपने दर्द को सहने की कोशिश नहीं कर रही हूँ पर यह दर्द ही इतना ज्यादा है कि शरीर को स्थिर रख पाना मेरे लिए मुश्किल हो रहा है। इधर मेरा शरीर दर्द से कराह रहा है और उधर तुम्हारे दिल की धड़कन बढ़ती जा रही है। घर पर होकर भी तुम खुद को सुरक्षित नहीं महसूस कर रहे हो। कभी इस रिश्तेदार की तो कभी उस रिश्तेदार की खबर फोन पर ले रहे हो।

एक तो वैसे ही मैं दर्द से कराह रही हूँ और ऊपर से तुम इंसानों के मरने की वजह से मेरा दुःख और ज्यादा बढ़ता जा रहा है। आखिर तुम संतान तो मेरे ही हो न, तुम चाहे मेरे साथ जो भी करो मेरी खुदाई करो मुझसे मेरे सारे संसाधन छीन लो मुझे बंजर बना दो। मेरी हरियाली छीन लो फिर भी कुछ नहीं बोलने वाली चुपचाप सह लूँगी। माँ के हिस्से में दर्द सहने के सिवा आता ही क्या है? बच्चे जब बड़े हो जाते हैं तो उन्हें स्वार्थ में माँ कहाँ दिखती है जो भी हो मेरी सम्पत्ति पर हक तो तुम्हारा ही है न। देखो न! मैं तो अब भी तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाना चाहती लेकिन तुम्हारा दिया दर्द ही इतना ज्यादा है कि मेरा खुद पर नियंत्रण नहीं रह गया है। अब तो लगता है कि मरने के बाद ही मुझे मुक्ति मिलेगी लेकिन मैं मर गयी तो तुम कहाँ रहोगे और कैसे जिंदा रह पाओगे? क्या मंगल और चाँद तुम्हारे काम आएंगे?

प्रधानमंत्री मोदी के सूत्र वाक्य 'हुनर है तो कदर है' पर कार्य कर रही–विद्या भारती

केंद्र सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 में लाई है, जो मातृभाषा को बढ़ावा देने वाली है। इसके जरिए छात्र–छात्राएं अपनी मातृभाषा में ही शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। इसके साथ उनके सर्वांगीण विकास पर भी बल दिया गया है। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा है कि 'हुनर है तो कदर है', राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बालक के अंदर कौशल विकास के माध्यम से हुनर विकसित होगा। विद्या भारती भी इसी दिशा में क्रियाशील है। अपने विद्यालयों में तकनीकी शिक्षा व कौशल विकास के लिए विभिन्न प्रकार के उपक्रम कर रही है। भैया–बहनों को विभिन्न व्यवसायी यथा कंप्यूटर शिक्षण, सिलाई–कढ़ाई आदि कार्यों को करना प्रारंभ कर दिया है। इसके लिए विद्यालयों में माह में एक दिन कौशल विकास दिवस (स्किल डे) भी मनाया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के क्रियान्वयन, छात्रों के विकास और शैक्षणिक गतिविधियों पर विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय संगठन मंत्री माननीय हेमचन्द्र जी से सृष्टि संवाद भारती के वरिष्ठ उपसंपादक रजनीश कुमार से हुई बातचीत के अंश इस प्रकार हैं–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति विषय पर विद्या भारती की क्या रणनीति है?

–राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 जब से आई है, तभी से विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान इसके क्रियान्वयन के लिए कार्य कर रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बारे में सामान्य जन को जानकारी हो सके, सभी शिक्षकों को जानकारी हो सके, अभिभावकों को जानकारी हो सके, भैया–बहनों और मातृशक्ति को जानकारी हो सके, इसके लिए विद्या भारती ने विभिन्न प्रकार के सेमिनार और गोष्ठिया की विद्या भारती विद्वत परिषद के माध्यम से भी प्रबुद्धजनों में गोष्ठियाँ और सेमिनार करवाएं ताकि समाज में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बारे में एक सकारात्मक सोच का निर्माण हो सके। विद्या भारती ने प्रारंभ से ही जब पहला सरस्वती शिशु मंदिर सन् 1952 में गोरखपुर में प्रारंभ किया था, उस समय जो उद्देश्य व लक्ष्य भारतीय शिक्षा यानी भारत केन्द्रित शिक्षा का रखा था, उसी लक्ष्य के अनुरूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी भारत केंद्रित शिक्षा व्यवस्था को आधार बनाया गया है। विद्या भारती द्वारा भारत की माटी से युवा पीढ़ी को जोड़ने की शिक्षा के साथ–साथ भारतीय संस्कृति और भारतीय जीवन मूल्य पर आधारित शिक्षा व्यवस्था के आधार पर भैया–बहनों को सद्संस्कार विकसित करने का कार्य कर रही है, ताकि ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण हो सके, जो देशभक्ति, समाज सेवा व संस्कृति से ओतप्रोत हो। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बालक के सर्वांगि विकास की बात भी कही गई है। विद्या भारती भी बालक के शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास के लिए पांच आधर भूत विषयों का क्रियांवयन अपने विद्यालयों में करती है।

❖ राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू करने के लिए विद्या भारती की अब तक की क्या तैयारी है?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन ठीक प्रकार से हो सके, राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ), राष्ट्रीय शिक्षा नीति के दृष्टिकोण पर आधारित है, वह कक्षा कक्ष में आचार्यों द्वारा लागू किया जा सके, इसके लिए विद्या भारती आचार्यों को प्रशिक्षण दे रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में खेल–खेल में शिक्षा व क्रिया आधारित शिक्षण पर जोर दिया गया है ताकि बालक समझदार बन सके, अनुभव के आधार पर सीख सके। इसके लिए कक्षा कक्ष में क्रियाकलाप कराने के लिए साधन सामग्री व सहायक सामग्री की आवश्यकता होगी। इस सहायक सामग्री के निर्माण हेतु कार्यशालाएं एवं उसका उपयोग आचार्य अपने शिक्षण में किस प्रकार से करेंगे, इसका भी

प्रशिक्षण उन्हें दिया जा रहा है।

❖ राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्य को विद्या भारती किस प्रकार देखती है?

जैसा कि मैंने प्रारंभ में ही कहा है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के द्वारा भारतीय शिक्षा, भारत केंद्रित शिक्षा पर बल दिया गया है। हमारे गौरवशाली इतिहास, महापुरुषों के बारे में गौरव का भाव, देश के प्रति भक्ति भाव का निर्माण, इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति के द्वारा होगा, और एक जिम्मेदार नागरिक देश के लिए निर्माण होगा, जो भारत माता के लिए समर्पित भाव से कार्य करेगा।

❖ राष्ट्रीय शिक्षा नीति के पाठ्यक्रम को तैयार करने में विद्या भारती की क्या भूमिका है?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आने के बाद विद्या भारती राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) निर्माण करने में अलग–अलग प्रकार का सहयोग कर रही है।

❖ राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पंचपदी शिक्षा प्रणाली की क्या भूमिका है?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बालक का विकास कक्षा कक्ष में पंचपदी शिक्षण पद्धति के आधार पर हो, ऐसा प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई) के एनसिएफ में दिया गया है, अर्थात् विद्या भारती पंचपदी के आधार पर ही बालक के सर्वांगीण विकास के लिए कक्षा शिक्षण कार्य आचार्यों द्वारा करा रही है। पंचपदी विद्या भारती की अभिनव शिक्षण पद्धति मनोवैज्ञानिक है। इसके द्वारा बालक में क्रिया कलापों के द्वारा कठिन विषयों को सरलता से समझ जाता है, रटना नहीं पड़ता है। अर्थात उसकी समझ विकसित होती है। माननीय मोदी जी भी कहते हैं कि इस राष्ट्रीय नीति के द्वारा बालक समझदार बनेगा।

विद्या भारती प्रारंभ से ही मातृभाग में शिक्षण को बल दे रही है। कोई भी व्यक्ति अपनी मातृभाषा में ही किसी भी विषय को ठीक से समझ सकता है और समझा सकता है। दूसरी भाषा द्वयोपी हुई भाषा, जैसे - अंग्रेजी में बच्चे का पूरा समय रहने में चला जाता है, वह उसे समझ नहल सकता है। सभी विकसित देश मातृभाषा में ही सब प्रकार का व्यवहार करते हैं। विद्या भारती द्वारा मातृभाषा में ही शिक्षण कार्य कराया जा रहा है और उसी आधार पर अपने शिक्षकों को प्रशिक्षित भी किया जा रहा है। हमारे बच्चे अंग्रेजी विषय में कमजोर न रह जाए इसके लिए अंग्रेजी विषय का विशेष शिक्षण कराया जाता है।

❖ मातृभाषा आधारित शिक्षा दिए जाने को लेकर शिक्षक का चयन व प्रशिक्षण की क्या योजना है?

विद्या भारती प्रारंभ से ही मातृभाषा में शिक्षण को बल दे रही है। कोई भी व्यक्ति अपनी मातृभाषा में ही किसी भी विषय को ठीक से समझ सकता है और समझा सकता है। दूसरी भाषा (थोपी हुई भाषा, जैसे अंग्रेजी) में बच्चे का समय रटने में चला जाता है, वह उसे समझ नहीं सकता है। सभी विकसित देश मातृभाषा में ही सब प्रकार का व्यवहार करते है। विद्या भारती द्वारा मातृभाषा में ही शिक्षण कार्य कराया जा रहा है और उसी आधार पर अपने शिक्षकों को प्रशिक्षित भी किया जा रहा है। हमारे बच्चे अंग्रेजी विषय में कमजोर न रह जाएं इसके लिए अंग्रेजी विशेष शिक्षण कराया जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में तकनीकी व व्यवसायिक शिक्षा पर जो दिया गया है, इस विषय पर विद्या भारती क्या काम कर रही है?

देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा है कि 'हुनर है तो कदर है, विद्या भारती भी इसी दिशा में क्रियाशील है। विद्या भारती अपने विद्यालयों में तकनीकी शिक्षा व कौशल विकास के लिए विभिन्न प्रकार के उपक्रम कर रही है। भैया–बहनों को विभिन्न व्यवसाय यथा कम्प्यूटर शिक्षा, सिलाई–कढ़ाई के अलावा अन्य कौशल विकास के शिक्षण को करना प्रारंभ कर दिया है। इसके लिए विद्यालय में प्रत्येक माह में एक दिन कौशल विकास दिवस (स्किल डे) के रूप में मनाया जा रहा है। इस दिन भैया–बहनों को विद्यालय में प्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण न कराकर विभिन्न प्रकार के कौशल निर्माण के लिए क्रियाकलाप (एक्टिविटी) कराये जाते हैं।

❖ **वैश्विक शिक्षा के मद्देनजर भारतीय भाषाओं में शिक्षा दीक्षा कम होती जा रही है, इस पर आप क्या कहेंगे?**

किसी भी व्यक्ति की अपनी मातृभाषा में जब ठीक पकड़ होती है या उसे अपनी मातृभाषा का समुचित ज्ञान होता है तो दूसरी भाषा को सीखने में उसे अधिक समय नहीं लगता है। केवल अंग्रेजी भाषा सीखने से ही वैश्विक ज्ञान संभव नहीं है। जैसे, मैंने पहले कहा है कि सभी विकसित देश अपनी–अपनी मातृभाषाओं में ही सब प्रकार का व्यवहार करते हैं। वैश्विक स्तर पर जर्मनी जाने पर जर्मन सीखनी पड़ेगी, जापान जाने पर जापानीज, रूस जाने पर रशियन सीखनी पड़ेगी, यह तब होगा जब उसकी मातृभाषा स्वयं अच्छी होगी। इसलिए मातृभाषा को सीखने–सिखाने में अधिक ध्यान देना ही उचित रहेगा। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा को बढ़ावा देने का प्रावधान ही नहीं है, बल्कि उसका और अधिक विकास करने पर जोर दिया गया है।

❖ **क्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति आने वाली पीढ़ियों के लिए वरदान साबित होगी?**

जब राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधार पर विद्यालयों में शिक्षण कार्य होगा तो निश्चित रूप से बालकों का सर्वांगीण विकास होगा और एक अच्छी युवा पीढ़ी तैयार होगी, जिसके पास किसी न किसी काम का कौशल होगा, वह शारीरिक दृष्टि से सबल होगा, यौगिक दृष्टि से संयमित होगा, मानसिक दृष्टि से सद्विचारी होगा, बौद्धिक दृष्टि से सत्यान्वेशी एवं आध्यात्मिक दृष्टि से सेवाभावी होगा तो हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति आने वाली पीढ़ी के लिए वरदान साबित होगी।

बर्फ की नदी

यह कहानी शिमला के एक छोटे से गाँव की है। सर्दियों का मौसम था। रूद्रेश और पंकज करीबी दोस्त थे और वे दोनों गाँव में टैक्सी चलाने का काम करते थे। सर्दियों की बर्फ के कारण गाँव में टैक्सी चलाना कठिन था। इसीलिए उन दोनों ने शहर जाकर कुछ काम खोजने का फैसला किया।

अगली सुबह वे अपना–अपना सामान बांधकर निकल पड़े। चलते–चलते उन्हें रास्ते में एक नदी मिली। सर्दियों के कारण नदी पर बर्फ बन गई थी। उस नदी का चलना बहुत मुश्किल था क्योंकि पैर फिसलने पर गहरी चोट लग सकती थी। वे दोनों नदी को पार करने के लिए दूसरे रास्ते तलाशने लगे। लेकिन उन्हें नदी पार करने के लिए न तो पुल मिला और न ही कोई जमीन। पंकज बोला "हमारी तो किस्मत ही खराब है, चलो गाँव वापस चलते हैं।"

रूद्रेश बोला– "नहीं, नदी पार करने के बाद शहर थोड़ी ही दूरी पर है। हम इतना चलकर आये हैं, अब हम हार नहीं मान सकते।" और ऐसा कह कर वह धीरे–धीरे आगे बढ़ने लगा। पंकज उस पर चिल्ला रहा था कि वह न जाए क्योंकि वह खुद को चोट पहुंचा सकता है। तभी रूद्रेश का पैर फिसलने के कारण गिर पड़ा "मैंने कहा था कि मत जाओ' हंसते हुए पंकज रूद्रेश को कह रहा था। रूद्रेश ने कोई जवाब नहीं दिया और उठकर फिर आगे बढ़ने लगा। वह कुछ कदम ही चला था कि तभी वह फिर से गिर गया। पंकज लगातार उसे मना करता रहा लेकिन रूद्रेश आगे बढ़ता गया।

वो शुरू से दो–तीन बार गिरा जरूर लेकिन जल्दी ही उसने सावधानी से चलना सीख लिया था और देखते–देखते नदी पार कर गया। दूसरी तरफ पहुंच कर रूद्रेश बोला "देख भाई मैंने नदी पार कर ली है अब तुम्हारी बारी है" "नहीं, मैं गिरने से डरता हूँ। मैं यहाँ सुरक्षित हूँ।" पंकज बोला। रूद्रेश ने उसे हिम्मत दिलायी, फिर भी पंकज नहीं आया. अंततः वह शहर की तरफ आगे बढ़ गया।

''गिरना महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि बार-बार गिरने पर उठने की हिम्मत रखना महत्वपूर्ण है। इसलिए हमेशा कोशिश करते रहना चाहए।''

बालकोना

स्ट्रॉ का मजाक (The Funny Straw)

आवश्यक सामग्री – एक लीटर की बिना ढक्कन की खाली बोतल और कोल्डड्रिंक पीने वाली एक वायु नलिका (Straw) जिसके एक सिरे का छेद दूसरे की तुलना में महीन हो।

ऐसा करो –

1. बोतल को पानी से पूर्णतः भर दो।
2. नलिका को बोतल में डालो।
3. किसी व्यक्ति को बारी–बारी से नलिका के दोनों सिरे से पानी पीने के लिए कहो।

आप देखते हैं कि –

नलिका के एक ही चौड़े सिरे से पानी पीना संभव होता है। दूसरे सिरे के महीन छेद से पानी नहीं आता।

वैज्ञानिक कारण –

1. जब कोई व्यक्ति महीन छेद वाले सिरे से वायु नलिका (Straw) द्वारा पानी पीने की कोशिश करता है तो हवा छेद के द्वारा उसके मुँह में प्रवेश कर जाती है। वह इस तरह पानी नहीं पी सकता है।

2. जब वह सामान्य छिद्र वाले सिरे से पानी पीने की कोशिश करता है तो हवा के दाब का उसके मुँह तथा पानी की सतह के बीच अन्तर बन जाता है। दाब में अंतर के कारण वह पानी पी सकता है।

सिद्धान्त-

1. जब हम नलिका (Straw) द्वारा पानी पीते हैं, तो मुँह में निचले जबड़े की ऊपर–नीचे की गति के कारण हवा नाक द्वारा बाहर निकलती है, जिससे मुँह और पानी की सतह के बीच वायु दाब में अंतर उत्पन्न हो जाता है।

2. दाब में अंतर होने से पानी पीना सरल हो जाता है, क्योंकि पानी का प्रवाह तभी तक होता है जब तक दाब समान न हो जाय।

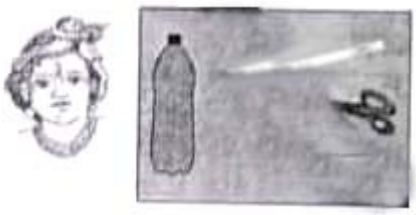

(1)

(2)

(3)

गतिविधियाँ

शिविर सम्पन्न

राष्ट्रीय उद्यान दुधवा पार्क के मध्य भारत नेपाल बार्डर पर स्थित जन शिक्षा समिति अवध प्रांत द्वारा संचालित सरस्वती संस्कार केन्द्र/एकल विद्यालयों का शिविर 22 मार्च 2023 को श्रीमान जी हरि बाबू एवम् बल्देव प्रसाद श्रीवास्तव जी, प्रधानाचार्य के द्वारा माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्जवलन एवम् पुष्पार्चन के साथ प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम की प्रस्ताविक हरिबाबू जी ने रखी, कार्यक्रम में मिथिलेश राना पूर्व प्रधान, अध्यक्ष सहकारी समिति चन्दन चौकी श्री रामाधार जी जिला अध्यक्ष बनवासी कल्याण आश्रम श्रीमान मुकेश बंसल (प्रधान) पूर्व छात्र विद्या भारती तथा श्रीमान सम्पूर्णानन्द जी खण्ड प्रचारक पलिया भी उपस्थित रहे, संस्कार केन्द्र के कुल भैया/बहिनो की उपस्थिति 160 रही। कार्यक्रम में सभी अतिथि अभ्यागत महानुभावो का आभार विद्यालय के प्रधानाचार्य एवम् कार्यक्रम के सर्व व्यवस्था प्रमुख श्रीमान बल्देव जी ने किया। कार्यक्रम का संचालन नरोत्तम प्रकल्य प्रभारी ने किया। कार्यक्रम में पोया, पचपेड़ा बिरिया, नझोटा, बेला परसुआ, सूडा के संस्कार केन्द्र के भै0/ब0 ने प्रतिभाग किया।

प्रधानाचार्य कक्ष नहीं, प्रेरणा कक्ष होना चाहिए : यतीन्द्र

विद्या भारती के प्रधानाचायों ने अपने समर्पण और प्रतिबद्धता और प्रतिबद्धता के बल पर श्रेष्ठ विद्यालयों को स्थापित किया और उन्हें प्रतिष्ठा दिलाई, ऐसे प्रधानाचार्यो का व्यक्तिगत जीवन और संस्था में कार्य व्यवहार उनके छात्रों, अभिभावकों और समाज के लोगों के लिए प्रेरणादायी रहा है। इसी कारण हमारे विद्यालयों के प्रधानाचार्य कक्ष को प्रेरणा का नाम दिया जा सकता है। ये बाते विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री यतीन्द्र ने व्यक्त की। राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री यतीन्द्र निराला नगर स्थित सरस्वती कुज भारतीय शिक्षा समिति उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित प्रांतीय प्रधानाचार्य सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। यतीन्द्र ने कहा कि विद्या भारती शिक्षा के भारतीय मूल्यों और वैश्विक ज्ञान दोनों के युगानुकूल समन्वय पर आधारित शिक्षा व्यवस्था स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रतिकूल परिस्थितियों के मध्य भी हमारे आचायों एवं प्रधानाचार्यों ने अपने परिश्रम से समाज के बीच विद्या भारती को स्थापित करने में बड़ी भूमिका निभाई है। नई शिक्षा नीति के निर्माण एवं क्रियान्वयन दोनों में हमारे प्रधानाचार्यो की बड़ी भूमिका है। बेहतर समाज निर्माण के लिए चरित्रवान, राष्ट्रभक्त और संवेदनशील पीढ़ी निर्माण का चुनौतीपूर्ण कार्य हम कर रहे है। शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मूल्यों के प्रति आस्था और आध्यात्म के समन्वय के हम पक्षधर है। धर्म विहीन शिक्षा समाज का भला नहीं कर सकती है।

उन्होंने कहा कि हमने प्रारम्भ काल से हो शिक्षा व्यवस्था बदलने का लक्ष्य रखा था। आज हम नई शिक्षा नीति के द्वारा इस कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। शिक्षा के माध्यम से समाज बदलना बालक के जीवन को बदलना, आचार्यों के मनोभाव को बदलना हमारा उद्देश्य होना चाहिए। यतीन्द्र ने कहा कि प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता, छात्रों को स्वावलंबी बनाने के साथ–साथ हमारी शिक्षा पद्धति का उद्देश्य राष्ट्र का निर्माण करना भी है।

बालिका शिक्षा बैठक सम्पन्न

दिनांक 15.05.23 से 16.05.23 तक प्रांतीय बालिका शिक्षण बैठक का आयोजन सरस्वती बालिका विद्यालय सूर्यकुण्ड,गोरखपुर में हुआ। जिसमें गोरक्ष प्रांत से 16 प्रतिभागियों ने जिलाशः प्रतिभाग किया।

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रुप में उमाशकर मिश्र जी (क्षेत्रीय बालिका शिक्षा प्रभारी उपस्थित रहें।इस सत्र में उन्होनें कार्ययोजना निर्माण, विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों को सम्पादित कर क्रियान्वित करने का निर्देश प्रदान किया ,जिससे बालिका में नेतृत्व क्षमता,कौशल विकास एवं दया आदि गुणों का प्रकटीकरण हो सके।

बैठक के प्रथम सत्र में क्षेत्रीय बालिका शिक्षा प्रमुख श्रीमती अर्चना अवस्थी जी ने व्छस्प्छम् अपने उद्बोधन में बालिका शिक्षा परिषद के उदेश्य एवं उस परिषदों के माध्यम से बालिकाओं में भावनात्मक, रचनात्मक एवं नैसर्गिक विकास हो। जिससे बालिका के समग्र विकास की परिकल्पना साकार होगी।

समापन सत्र में शिशु शिक्षा समिति गोरक्ष प्रांत के मंत्री मा. रामनाथ गुप्त ने "परिवार प्रबोधन" विषय पर पाथेय प्रदान किया। उन्होनें परिवार को समाज की धुरी बताते हुए कहा कि हमें कुटुम्ब संरक्षण की आवश्यकता है। बालिकाओं की ईसाई मिशनरियों से सुरक्षित रख अपनी संस्कृति का संवर्धन करना है। क्योंकि परिवार के सहयोग से ही विद्यालय की सार्थकता है।और नई पीढ़ी इस संयुक्त परिवार की पोषक बनें।

सरस्वती बालिका विद्यालय रामबाग बस्ती की प्रधानाचार्या श्रीमती प्रियंका सिंह ने मंचस्थ अतिथियों का आभार ज्ञापन किया।

हमें ग्रामीण शिक्षा को मजबूत करने की आवश्यकता है : मा. हेमचंद्र जी

अमेठी। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित जन शिक्षा समिति काशी प्रदेश द्वारा संचालित सरस्वती शिक्षा मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ग्रामभारती, परितोष अमेठी में तीन दिवसीय प्रधानाचार्य वार्षिक कार्य योजना बैठक दिनांक 8 मई से 10 मई तक संपन्न हो रही है।

द्वितीय दिवस के दिन वंदना सत्र में मां सरस्वती के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन एवं पुष्पार्चन के बाद कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय संगठन मंत्री हेमचंद्र जी, काशी प्रांत के संगठन मंत्री डॉ. राम मनोहर, जन शिक्षा काशी प्रांत के प्रांतीय मंत्री अनुग्रह नारायण मिश्र एवं विद्यालय के प्रबंधक ओंकार नाथ शुक्ला तथा अन्य बंधुओं में प्रदेश निरीक्षक जन शिक्षा समिति राजबहादुर दीक्षित, अध्यक्ष गोविंद सिंह चौहान, उपाध्यक्ष सतीश शर्मा, संभाग निरीक्षक अयोध्या प्रसाद मिश्र तथा वीरेंद्र सिंह के द्वारा पुष्पार्चयन कार्यक्रम संपन्न हुआ।

काशी प्रदेश के 117 विद्यालय के प्रधानाचार्य बंधुओं में से 90 प्रधानाचार्य बंधु वार्षिक कार्य योजना में उपस्थित रहे। वंदना सत्र में क्षेत्रीय संगठन मंत्री हेमचंद्र जी ने बताया कि विद्या भारती का अंतिम केंद्र बिंदु भैया–बहन हैं। भैया बहनों का परिवर्तन, व्यवहार, आचार विचार, संस्कार, प्रभावी होना चाहिए । भारत के ग्रामीण शिक्षा पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा– एक विद्यालय, एक प्रधानाचार्य होना चाहिए। ग्रामीण शिक्षा का विकास तभी संभव है, जब हमारे विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था दुरुस्त रहें।

ग्रामीण शिक्षा का नया नाम शिक्षा एवं ग्राम विकास बताएं। उन्होंने कहा कि हमारे ग्रामीण विद्यालय जब विकसित होंगे, यहां की चिकित्सा व्यवस्था शिक्षा एवं अन्य सभी प्रकार की व्यवस्थाएं अच्छी रहेगी, तभी हमारे भैया बहन शहर की तरफ पलायन नहीं करेंगे। प्रधानाचार्य बंधुओं को बताया कि पोषक गांव की सूची बनाई जाए। संकुल स्तर पर सूची बने, जनपद स्तर पर सूची बने, अपने विद्यालय के भैया बहन जिला एवं प्रांत की सूची में आएं। गांव में चिकित्सीय सुविधाएं उपलब्ध

हो। बाल केंद्रित शिक्षा पर बल दिया गया। इसके साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण, ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत, प्लास्टिक मुक्त अभियान, स्वदेशी अभियान, कुटुंब प्रबोधन, स्वच्छता, सामाजिक समरसता, नागरिक कर्तव्य एवं भौगोलिक विस्तार पर विस्तृत व्याख्या की गई।

विद्यालय के आधारभूत विषय शारीरिक शिक्षा, योग शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा, संगीत शिक्षा एवं संस्कृत शिक्षा पर विशेष रूप से बल देने की बात कही गई। और यह भी बताया गया कि आचार्य के शिक्षण में पंचपदी शिक्षण विधि अपना बहुत ही आवश्यक है।

भारतीय शिक्षा समिति उत्तर प्रदेश

भारतीय शिक्षा परिषद के निर्देशन में भारतीय शिक्षा समिति उ0प्र0 द्वारा आयोजित वर्तमान सत्र 2022–23 की सरस्वती प्रतिभा खोज परीक्षा में कक्षा पंचम के 149 भैया बहिन तथा कक्षा अष्टम के 176 भैया बहिन सम्मिलित हुए। इस परीक्षा में कक्षा पंचम में भैया समर पाण्डेय, सरस्वती शिशु मन्दिर मालवीय नगर गोण्डा ने 296 अंक प्राप्त कर प्रान्त में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा कक्षा अष्टम में भैया अभिषेक कुमार यादव, सरस्वती विद्या मन्दिर ई०का० राम सनेही घाट बाराबंकी ने 312 अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। वरीयता क्रम में स्थान प्राप्त कर्ता भैया–बहिनों की सूची निम्नलिखित है। स्थान प्राप्तकर्ता एवं मेधावी घोषित भैया–बहिनों को हार्दिक बधाई।

सरस्वती प्रतिभा खोज परीक्षा में वरीयता क्रम से स्थान (कक्षा-पंचम)

क्रं.स.	प्रतिभागी का नाम	विद्यालय का नाम	स्थान	प्राप्तांक
1	भैया समर पाण्डेय	सरस्वती शिशु मन्दिर मालवीय नगर, गोण्डा	प्रथम	296
2	भैया अविरल गोतम	सरस्वती शिशु मन्दिर गंगानगर, शुक्लागंज, उन्नाव	द्वितीय	166
3.	भैया शाश्वत झा	सरस्वती शिशु मन्दिर, हरगांव सीतापुर	तृतीय	258
4.	भैया अथर्व राज सोनी	सरस्वती शिशु मन्दिर मालवीय नगर, गोण्डा	चतुर्थ	247
5.	भैया सक्षम मौर्य	विवेकानन्द शिशु कुंज विद्युत नगर, अम्बेडकरनगर	पंचम	244
6.	बहिन सिद्धि ओझा	सरस्वती शिशु मन्दिर मालवीय नगर, गोण्डा	षष्ठ	241
7.	बहिन ईशू गुप्ता	सरस्वती शिशु मन्दिर नानक पुरा साकेत अयोध्या	सप्तम	240

सरस्वती प्रतिभा खोज परीक्षा में वरीयता क्रम से स्थान (कक्षा-अष्टम्)

1.	अभिषेक कुमार यादव	सरस्वती विद्या मन्दिर ई०का० राम सनेही घाट बाराबंकी	प्रथम	312
2.	शुमी वर्मा	सरस्वती शिशु मन्दिर इं०का तहसील फतेहपुर बाराबंकी	द्वितीय	307
3.	भाव्या त्रिपाठी	डा०हेडगेवार सरस्वती शिशु मन्दिर आवास विकास लखीमपुर	तृतीय	293
4.	करन गुप्ता	गं०प्र० महते सरस्वती विद्या मन्दिर इं०का० गंगा नगर, उन्नाव	चतुर्थ	286
5.	शिवांश चौधरी	सरस्वती विद्या मन्दिर इं०का० माधवपुरी बहराइच	पंचम	181
6.	आयुष कुमार तिवारी	सरस्वती शिशु मन्दिर राजाजी पुरम, लखनऊ	षष्ठ	275
7.	सौम्या तिवारी	सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर इं०का० मालवीय नगर, गोण्डा	षष्ठ	275
8.	अंश मौर्या	सरस्वती विद्या मन्दिर उ०मा०वि०टाण्डा अम्बेडकरनगर	षष्ठ	275
9.	रुद्रांश शर्मा	पं०दीन दयाल उपाध्याय स०वि० म० इ०का०, लखीमपुर	सप्तम	271
10.	वैभव द्विवेदी	सरस्वती शिशु मन्दिर मोहम्मदी लखीमपुर	सप्तम	271
11.	आन्जनेय श्रीवास्तव	गं०प्र० महते सरस्वती विद्या मन्दिर इं०का० गंगा नगर, उन्नाव	अष्टम	266
12.	अभय प्रताप	आनन्दी देवी सरस्वती विद्या मन्दिर इं0का0, सीतापुर	नवम	262
13.	खुशबू देवी	स0ध0 सरस्वती विद्या मन्दिर बालिका इं0का0 मिश्राना, लखीमपुर	दशम	260

स.वि.म. सेक्टर क्यू, अलीगंज में डिजटल का प्रारम्भ मा. प्रान्त प्रचारक एवं क्षेत्रीय संगठन विद्या भारती

संकुल प्रमुख अभ्यास वर्ग में मा. शिव कुमार जी अखिल भारती मंत्री का स्वागत करते हुए

संकुल अभ्यास वर्ग में प्रधारे हुए अधिकारी एवं संकुल प्रमुख बंधुगण

डाक पंजी. क्र.: **S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023**
प्रेषण डाकघर–रेल सेवा, चारबाग, लखनऊ । प्रेषण तिथि– **5,6,7,8**

प्रान्तीय बालिका शिक्षा बैठक गोरक्ष प्रान्त

बैठक में उपस्थित बालिका शिक्षा प्रमुख बहिने

मुद्रकः प्रिन्टको प्रिन्टर्स–**22**, जगत नारायण रोड, लखनऊ । प्रकाशक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी, शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, निराला नगर, लखनऊ– **226020**, सम्पादक : उमाशंकर मिश्र।

प्रकाशन तिथि : **01.05.2023**